NCERT SOLUTIONS

CLASS - 12th



aglasem.com

Class : 12th
Subject : History
Chapter : 5
Chapter Name : यात्रियों के नज़रिए - समाज के बारे में उनकी समझ

Q1 किताब-उल-हिंद पर एक छोटी टिप्पणी लिखें।

Answer. किताब-उल-हिंद अल-बिरूनी द्वारा लिखी गई थी। यह सरल था और अरबी में लिखा गया था। इसे धर्म, दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, कीमिया, शिष्टाचार और रीति-रिवाज, सामाजिक जीवन, वजन और उपाय, प्रतिमा, कानून और मेट्रोलॉजी जैसे विषयों पर 80 अध्यायों में विभाजित किया गया था। यह एक बहुत ही विशिष्ट संरचना में लिखा गया था, प्रत्येक अध्याय आम तौर पर एक प्रश्न के साथ शुरू होता है, इसके बाद संस्कृत परंपराओं पर आधारित विवरण होता है, और अन्य संस्कृतियों के साथ तुलना के साथ निष्कर्ष निकाला जाता है।

Page : 138 , Block Name : Short Answer

Q2 उन दृष्टिकोणों की तुलना करें और अंतर बताए जिनसे इब्न बतूता और बर्नियर ने भारत में अपनी यात्रा के अपने लेख लिखे।

Answer. इब्न बतूता ने यात्रा के माध्यम से प्राप्त अनुभव को ज्ञान का अधिक महत्वपूर्ण स्रोत माना। उन्होंने नई संस्कृतियों, लोगों, विश्वासों, मूल्यों, आदि के बारे में सावधानीपूर्वक अपने विचारो को दर्ज किया। उन्होंने उन सभी के बारे में लिखा, जिन्होंने उन्हें आंखों और कानों के लिए खुश सांसारिक मनोरंजन दिया। इब्न बतूता ने, अपनी नवीनता की वजह से उन्हें प्रभावित और उत्साहित करने वाली हर चीज का, वर्णन करने का निश्चय किया। जबकि, बर्नियर उस समय भारत आया था जब मुगलों ने शासन किया और देश के कई हिस्सों की यात्रा की और उसने जो देखा उसके बारे में लिखा। भारत में उसने जो देखा अक्सर उसकी तुलना यूरोप की स्थिति और विशेष रूप से फ्रांस के साथ की।

Page : 138 , Block Name : Short Answer

Q3 बर्नियर के विवरण से निकलने वाले शहरी केंद्रों की तस्वीर पर चर्चा करें।

Answer. 17 वीं शताब्दी के दौरान, लगभग 15 प्रतिशत भारतीय आबादी कस्बों में रहती थी, यह उसी अवधि में पश्चिमी यूरोप में शहरी आबादी के अनुपात से अधिक था। यहाँ के शहर अपने अस्तित्व के लिए शाही शिविरों पर निर्भर थे। शहरी समूहों में पेशेवर वर्ग जैसे चिकित्सक, शिक्षक, वकील, चित्रकार, वास्तुकार, संगीतकार, सुलेखक आदि शामिल थे। कुछ लोग शाही संरक्षण पर निर्भर थे, कई ने अन्य संरक्षकों की सेवा करके अपना जीवन यापन किया, जबकि अभी भी अन्य लोगों ने भीड़ भरे बाजारों में आम लोगों की सेवा की।

Page : 138 , Block Name : Short Answer

Q4 इब्न बतूता द्वारा दास प्रथा की सन्दर्भ में दिए गए सबूतों का विश्लेषण करें।

Answer. गुलामों को बाजारों में खुलेआम किसी भी सामान की तरह बेचा जाता था और नियमित रूप से उपहार के रूप में भेंट किया जाता था। जब इब्न बतूता सिंध पहुंचा तो उसने सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक के लिए उपहार

के रूप में "घोड़े, ऊंट और दास" खरीदे। उनके विवरण से यह स्पष्ट था कि दासों में काफी अंतर था। सुल्तान की सेवा में कुछ महिला दास संगीत और नृत्य के विशेषज्ञ थे। सुल्तान द्वारा अपने रईसों पर नजर रखने के लिए महिला दासों को भी नियुक्त किया गया था। दास आम तौर पर घरेलू श्रम के लिए उपयोग किए जाते थे। घरेलू श्रम के लिए महिला दासों की कीमत बहुत कम थी।

Page : 138 , Block Name : Short Answer

Q5 सती प्रथा के वे कौन से तत्व थे जिन्होंने बर्नियर का ध्यान आकर्षित किया?

Answer. महिलाओं का उपचार पश्चिमी और पूर्वी समाजों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर बन गया। सती प्रथा ने बर्नियर के मन को आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि कुछ महिलाओं ने मृत्यु को गले लगा लिया, जबकि अन्य को मरने के लिए मजबूर किया गया।
उनके द्वारा सबसे मार्मिक वर्णन था - लाहौर में उन्होंने एक सुंदर युवा विधवा को बलिदान करते हुए देखा, जिनकी आयु बारह वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। जब वह भयानक गड्ढे के पास गई तो वह जीवित से ज्यादा मृत लग रही थी, उसके मन की पीड़ा का वर्णन नहीं किया जा सकता था - वह फूट-फूट कर रोने लगी, लेकिन कुछ ब्राह्मणों ने एक वृद्ध महिला की सहायता की, जिसे उसकी बांह के नीचे दबाया गया था। उसे लकड़ी पर बैठा दिया, उसके हाथ और पैर बांध दिए ताकि वह भाग न सके और वह जिंदा जल गई।

Page : 138 , Block Name : Short Answer

Q6 अल-बिरूनी की जाति व्यवस्था की समझ पर चर्चा करें।

Answer. अल-बिरूनी ने अन्य समाजों में समानताएं खोजकर जाति व्यवस्था को समझाने की कोशिश की। उन्होंने प्राचीन पारस का उदाहरण लिया, उन्होंने बताया कि वहां चार सामाजिक श्रेणियों को मान्यता दी गई थी - शूरवीरों और राजकुमारों; भिक्षु, अग्नि-पुजारी और वकील; चिकित्सकों, खगोलविदों और अन्य वैज्ञानिकों; और किसानों और कारीगरों। इस उदाहरण के माध्यम से उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया कि सामाजिक विभाजन भारत के लिए अद्वितीय नहीं थे। उसी समय उन्होंने बताया कि इस्लाम के भीतर सभी पुरुषों को समान माना जाता था, जो केवल धर्मनिष्ठा के पालन में भिन्न था।
अल-बिरूनी ने वर्णों की प्रणाली के बारे में भी लिखा - सबसे ऊंची जाति ब्राह्मणों की थी, अगली क्षत्रिय हैं, फिर वैश्य और अंत में शूद्र। जाति व्यवस्था के बारे में उनके विवरण से पता चलता है कि यह उनके प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन से काफी प्रभावित था, जिसने ब्राह्मणों के दृष्टिकोण से प्रणाली को नियंत्रित करने वाले नियमों को निर्धारित किया था।
जाति व्यवस्था के ब्राह्मणवादी वर्णन में उनकी स्वीकारोक्ति के बावजूद अल-बिरूनी ने प्रदूषण की धारणा को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने टिप्पणी की कि जो कुछ भी अशुद्धता की स्थिति में आता है, वह प्रयास करता है और शुद्धता की अपनी मूल स्थिति को प्राप्त करने में सफल होता है। सूरज हवा को साफ करता है, और समुद्र में नमक पानी को प्रदूषित होने से बचाता है। यदि ऐसा नहीं होता, तो अल-बिरूनी के अनुसार, पृथ्वी पर जीवन असंभव होता। उनके अनुसार, सामाजिक प्रदूषण की अवधारणा, जाति व्यवस्था के लिए आंतरिक, प्रकृति के नियमों के विपरीत थी।

Page : 138 , Block Name : Long Answer

Q7 क्या आपको लगता है कि इब्न बतूता का विवरण समकालीन शहरी केंद्रों में जीवन को समझने में उपयोगी है? अपने जवाब के लिए कारण दें।

Answer. समकालीन शहरी केंद्रों में जीवन के बारे में इब्न बतूता के विवरण निम्नानुसार हैं -
→ उन्होंने शहरों को उन लोगों के लिए रोमांचक अवसरों से भरा पाया जिनके पास आवश्यक संसाधन और कौशल थे।
→ युद्धों और आक्रमणों के कारण होने वाले सामयिक व्यवधान को छोड़कर वे घनी आबादी वाले और समृद्ध थे।
→ शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें थीं और कई तरह के सामानों के साथ उज्ज्वल और रंगीन बाज़ार थे।
→ बाज़ार न केवल आर्थिक लेन-देन के स्थान थे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र भी थे।
→ अधिकांश बाज़ारों में एक मंदिर और एक मस्जिद थी, और उनमें से कुछ में नर्तकियों, संगीतकारों और गायकों द्वारा सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान चिह्नित थे।
→ व्यापार और वाणिज्य के अंतर-एशियाई नेटवर्क अच्छे थे।
→ भारतीय निर्माताओं की पश्चिम एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया दोनों में बहुत मांग थी और यह कारीगरों और व्यापारियों के लिए भारी लाभ प्राप्त करता था।
→ भारतीय वस्त्र, विशेष रूप से सूती कपड़े, महीन मलमल, रेशम, ब्रोकेड और साटन की बहुत मांग थी।
उन्होंने दिल्ली को एक विशाल शहर के रूप में वर्णित किया, जिसमें एक बड़ी आबादी थी, भारत में सबसे बड़ा और दौलताबाद (महाराष्ट्र में) लगभग दिल्ली के आकार जैसा था। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उनका विवरण हमें शहरी केंद्रों में जीवन के बारे में जानकारी देता है लेकिन हमें भोजन की आदतों, जीवनशैली के पेशेवरों आदि के बारे में पूरी जानकारी नहीं मिलती है।

Page : 138 , Block Name : Long Answer

Q8 इस बात पर चर्चा करें कि बर्नियर का विवरण इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज के पुनर्निर्माण में कैसे मदद करता है।

Answer. समकालीन ग्रामीण समाज पर बर्नियर का विवरण था -
→ उनके अनुसार, भारत में भूमि के निजी संपत्ति के स्वामित्व की कमी थी। उसका निजी संपत्ति के गुणों में एक दृढ़ विश्वास था, और ताज के स्वामित्व को राज्य और उसके लोगों दोनों के लिए हानिकारक मानता था।
→ उनके अनुसार, मुग़ल साम्राज्य में सम्राट सभी भूमि के मालिक थे और इसे अपने रईसों के बीच वितरित करते थे और यह अर्थव्यवस्था और समाज के लिए विनाशकारी परिणाम थे। यह धारणा अन्य यात्रियों द्वारा भी दी गई थी, जिससे पता चलता है कि यह प्रचलित था और इस तरह यह समकालीन ग्रामीण समाज के पुनर्निर्माण का एक महत्वपूर्ण कारक बन गया।
→ उनके अनुसार, ज़मींदार अपने बच्चों के लिए अपनी जमीनें पास नहीं कर सकते थे। इसलिए वे उत्पादन के निर्वाह और विस्तार में किसी भी दीर्घकालिक निवेश के खिलाफ थे।
→ भूमि में निजी संपत्ति की अनुपस्थिति, इसलिए, भूमि को सुधारने या बनाए रखने की चिंता वाले जमींदारों के वर्ग के उभरने को रोकती थी, जिसके कारण कृषि की एक समान बर्बादी होती थी, किसान का अत्यधिक उत्पीड़न और निरंतरता सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग को छोड़कर समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में गिरावट।
→ उनके अनुसार, बहुत अमीर और शक्तिशाली वर्ग अल्पमत में था। उन्होंने यह भी कहा कि भारत में कोई मध्य राज्य नहीं था।

Page : 138 , Block Name : Long Answer

Q9 बर्नियर के इस अंश को पढ़ें -
कई उपकरण के निराश्रित व्यक्तियों द्वारा बनाई गई सुंदर कारीगरी के उदाहरण हैं, और जो किसी मास्टर से निर्देश प्राप्त कर सकते हैं। कभी-कभी वे यूरोपीय निर्माण के इतने सटीक लेखों की नकल करते हैं कि मूल और

प्रतिलिपि के बीच का अंतर शायद ही समझा जा सकता है। अन्य वस्तुओ में, भारतीय उत्कृष्ट बंदूके और ऐसे सुंदर सोने के गहने बनाते हैं कि उन पर संदेह किया जा सकता है यदि उन लेखों की उत्कृष्ट कारीगरी किसी भी यूरोपीय सुनार द्वारा पार की जा सकती है। मैंने अक्सर उनके चित्रों की सुंदरता, कोमलता और विनम्रता की प्रशंसा की है। लेख में वर्णित शिल्पों को सूचीबद्ध करें। अध्याय में कारीगर गतिविधि के विवरण के साथ इनकी तुलना करें।

Answer. लेख में उल्लिखित शिल्प हैं: उत्कृष्ट बंदूके और सुंदर सोने के गहने।
अन्य कारीगर गतिविधियाँ हैं -
→ टेराकोटा मूर्तिकला की कला, नाव उत्पादन की कला, मंदिर वास्तुकला। (हम बंगाल के एक मंदिर से टेराकोटा की मूर्ति के माध्यम से जानते हैं।)
→ चित्रकारी की कला
→ कपड़े पर पैटर्न बुनाई की कला
→ संगीत और नृत्य की कला

Page : 138 , Block Name : Long Answer

Q10 दुनिया के रूपरेखा मानचित्र पर इब्न बतूता द्वारा देखे गए देशों को चिह्नित करते हैं। वे कौन से समुद्र हैं जिन्हें उसने पार किया होगा?

Answer. इब्न बतूता द्वारा दौरा किए गए देश हैं - मक्का, सीरिया, इराक, पारस, यमन, ओमान, भारत, चीन, सुमात्रा, मालदीव, श्रीलंका।
समुद्र के नाम हैं - हिंद महासागर, लाल सागर, अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, दक्षिण चीन सागर, पूर्वी चीन सागर, उत्तरी अटलांटिक महासागर, दक्षिण अटलांटिक महासागर।

Page : 139 , Block Name : Map Work

